परसंगवश:

आलोक मेहता

'एंग्री यंग मैन' का गुस्सा गलत

अमिताभ बच्चन से मेरी पहली मुलाकात 1984 के लोकसभा चुनाव के दौरान हुई थी। एक ही गेस्ट हाउस में ठहरे हुए थे और सुबह की चाय पर बातचीत के बाद इलाहाबाद के ग्रामीण क्षेत्रों की चुनाव सभाओं में सैकड़ों भोले-भाले लोगों के साथ थोड़ी-बहुत धूल हमने भी खाई थी। राजीव गांधी की कांग्रेस पार्टी ने ही नहीं, इलाहाबाद की विभिन्न संस्थाओं, युवाओं ने उनके पोस्टर लगाकर जोरदार प्रचार किया। अमिताभ से उनका कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं था। कुछ अमिताभ की फिल्मों से और कुछ पिता हरिवंश राय बच्चन की कविताओं से अभिभूत होने के कारण अपने प्रिय 'एंग्री यंग मैन' को संसद में देखना चाहते थे। इसी का नतीजा था कि 'राजीव लहर' में कद्दावर नेता हेमवतीनंदन बहुगुणा को पराजित कर अमिताभ सांसद बन गए। लेकिन वह राजनीति के कड़वे अनुभव सह नहीं पाए और पूरी तरह फिल्म-टी.वी. के लिए सक्रिय हो गए। मीडिया से भी उनके खट्टे-मीठे रिश्ते रहे। कई साल मीडिया का बायकाट किया। बाद में पत्रकारों से मीठी बातें करने लगे। मैं जिन अखबारों में रहा, विशेष इंटरव्यू, फोटो सेशन आदि किए। 70 वर्ष की उम्र में उनकी सक्रियता को भी मैं आदर्श मानता हूं।

फिर भी उनके हाल के 'गुस्से' से हजारों अन्य लोगों की तरह मुझे भी बहुत बुरा लगा। हमारी नाराजगी से शायद उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है लेकिन 'मूर्तिपूजक' देश में ऐसे बहुत से समाज सुधारक रहे हैं जिन्होंने अंधभक्ति को अनुचित करार दिया है। हमारी नाराजगी अमिताभ द्वारा बिहार में लगाए गए एक सामान्य प्रेरक पोस्टर पर घोर आपत्ति किए जाने पर है। अमिताभ बच्चन ने अपने 'फेसबुक' पर लिखा– 'बिहार पुलिस ने माओवादियों के खिलाफ लड़ाई में लोगों की भर्ती के लिए मेरे फोटो का इस्तेमाल किया। यह गैरकानूनी, गलत और मानहानि है। वे मेरी या मेरी टीम की अनुमति के बिना ऐसा नहीं कर सकते। हम अपने वकीलों से बात कर रहे हैं।' केवल हिंसा से कथित क्रांति के इच्छुक माओवादियों के अत्याचारों से प्रभावित कैमूर (बिहार) जिले के युवा पुलिस अधिकारियों ने क्षेत्र में 'सुपर 30' की तर्ज पर अधौरा प्रखंड के 30 प्रतिभाशाली युवकों को चुनकर प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने एवं पुलिस में भर्ती होकर ईमानदारी तथा बहादुरी से जनता की रक्षा करने की प्रेरणा के लिए एक पोस्टर लगवाया था। अमिताभ की आपत्ति से स्थानीय अधिकारी ही नहीं, बिहार पुलिस के वरिष्ठतम अधिकारी भी विचलित हो गए और तुरंत क्षमा मांगकर पोस्टर हटवा दिए। बिहार पुलिस ने यह भी स्पष्ट किया कि 'अमिताभ बच्चन के फोटो का इस्तेमाल किसी दुर्भावना से नहीं बल्कि पूरी तरह जनहित में किया गया और इसका कोई व्यावसायिक उद्देश्य नहीं था।' कैमूर के पुलिस अधीक्षक उमाशंकर सुधांशु ने कहा कि 'इस नक्सल प्रभावित जिले में युवाओं को माओवादियों के प्रभाव से दूर रखने के लिए ऐसा किया गया।' पोस्टर में अमिताभ की तस्वीर और कुछ पंक्तियों का मोटे अक्षरों में संदेश था–'सिर्फ ज्ञान ही आपको आपका हक दिलाता है।'

> गंभीर सवाल यह भी है कि सार्वजनिक जीवन और पर्दे पर 'आदर्श' झाड़ने वाला महानायक क्या माओवादी नक्सली संगठनों से इतना भयभीत है कि 'नक्सली न बनने के संदेश' तक का खतरा नहीं उठा सकता?

पोस्टर लगाने और हटने के बाद इस संदेश का कितना फायदा हुआ, यह तो देर से ही पता चलेगा लेकिन अमिताभ ने साबित कर दिया कि ज्ञान से उन्होंने अपने 'हक' का उपयोग कर लिया। निश्चित रूप से उनके नाम और फोटो पर उनका अधिकार है। लेकिन देश के विभिन्न इलाकों में 'अमिताभ फैन क्लब' के नाम पर कितने ही स्थानों पर दिखने वाले फोटो क्या उनकी अनुमति से लगे होंगे? सिनेमा और मनोरंजन चैनलों से अमिताभ बच्चन करोड़ों रुपया कमा रहे हैं। उत्तर प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों के 'आदर्श ब्रांड दूत' बनने से भी करोड़ों रुपया मिल जाता है। जिन विज्ञापनों से वह खास संदेश देकर करोड़ों ग्राहकों को मोहित कर रहे हैं, क्या सचमुच वे विज्ञापन 100 प्रतिशत लाभदायक होते हैं। उस 'ब्रांड', उस 'माल' में रत्तीभर खोट नहीं होता? वे जिन संदेशों और फिल्मों में महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद या अन्य महापुरुषों के नाम-मूर्तियां इत्यादि का इस्तेमाल करते हैं, क्या उनकी अनुमति कहीं से लेते हैं?

टी.वी. चैनलों के अपने कार्यक्रमों में करोड़पति बनने का सपना देखने वाले प्रतियोगी या स्टूडियो में बैठे दर्शक जब अमिताभ बच्चन को 'महानायक', 'देवतातुल्य', 'सदी के आदर्श कलाकार', 'करोड़ों के प्रेरक' इत्यादि प्रशंसा भरे वाक्य कहते हैं, तब अमिताभ फूले नहीं समाते लेकिन यदि उसी 'महानायक' की तस्वीर युवाओं को हिंसक माओवादियों से लड़ सकने की प्रेरणा देने के लिए इस्तेमाल कर ली जाए तो अमिताभ गुस्से में बौखलाकर 'मानहानि' कहकर दंड दिलवाने की धमकी देने लगते हैं। अपने पिता को आदर्श मानने वाले अमिताभ यह कैसे भूल गए कि हिंदीभाषी लाखों किशोरों-युवकों ने हरिवंश राय बच्चन की फोटो-कविताओं का पाठ करते हुए बहुत प्रेरणा ली और इसके लिए उन्होंने कभी 'बाबूजी' से अनुमति नहीं मांगी। कवि सम्मेलनों में डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, रमानाथ अवस्थी, कन्हैयालाल नंदन जैसे अनेक कवियों ने बच्चनजी की अनुपस्थिति में भी उनकी कविताओं की पंक्तियां पढ़ते हुए युवाओं को प्रेरित किया।

अमिताभ जब उत्तर प्रदेश को 'आदर्श विकास प्रदेश' बताकर वहीं की जनता को भ्रमित कर रहे थे, तब उन्हें क्या कोई तकलीफ हुई? गुजरात के कई अल्पसंख्यक संगठनों को मोदी राज के 'ब्रांड दूत' बनने पर तकलीफ हुई तो क्या अमिताभ को कोई कष्ट हुआ? गंभीर सवाल यह भी है कि सार्वजनिक जीवन और पर्दे पर 'आदर्श' झाड़ने वाला महानायक क्या माओवादी नक्सली संगठनों से इतना भयभीत है कि 'नक्सली न बनने के संदेश' देने तक का खतरा नहीं उठा सकता? 'फेसबुक' पर अमिताभ बच्चन के 32 लाख से अधिक प्रशंसक बताए जाते हैं। फेसबुक में आईं 2,571 प्रतिक्रियाओं में से अधिकांश में 'अमिताभ के विरोध और धमकी' की तीखी आलोचना की गई है। उनके एक प्रशंसक राहुल शिंगने ने फेसबुक पर लिखा– 'ऐसे लोग होते हैं जो किसी का भला नहीं चाहते। उनके लिए पैसा ही सब कुछ होता है। वे नहीं चाहते कि कोई बुरा आदमी गलत काम छोड़कर सही काम करे। आप वास्तव में 'बिग बी' हो।' एक अन्य प्रशंसक ने लिखा– 'कितना पैसा चाहिए आपको बिहार पुलिस द्वारा आपकी फोटो लगाने की अनुमति देने के लिए। शर्म करिए अमिताभजी।'

alokmehta@nationalduniya.com